नयी पीढ़ी को फासीवादी विचारधारा की घुट्टी

● नमिता, इलाहाबाद

मध्य प्रदेश और राजस्थान में नयी पीढ़ी को फासीवादी विचारधारा की घुट्टी पिलायी जा रही है। संघ परिवार द्वारा संचालित स्कूलों में तो यह पहले से ही चला आ रहा है। लेकिन इन भाजपा शासित राज्यों में अब बाक़ायदा सरकारी स्कूलों के पाठ्यक्रमों के जरिये अब छात्र-छात्राओं को हिटलर-मुसोलिनी के आदर्शों के पाठ पढ़ाये जा रहे हैं।

राजस्थान सरकार ने 8वीं और 12वीं कक्षा के पाठ्यक्रमों में जो बदलाव किये हैं उसमें फासीवाद की तारीफ़ में कसीदे पढ़े गये हैं। आइये ऐसे पाठों के कुछ नमूने देखते हैं। 'राजनीति विज्ञान की प्रमुख अवधारणाएँ और विचारधाराएँ' नामक 12वीं कक्षा की पुस्तक में कहा गया है –

'फासीवाद की देन को निम्न बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है --(1) फासीवाद लोकतंत्र के दोषों को दूर करता है। (2) संकटकालीन स्थिति में तत्काल निर्णय की आवश्यकता होती है और इसके लिए फासीवाद उपयुक्त है। (3) फासीवाद से राष्ट्रीयता की भावना का विकास होता है। (4) फासीवाद में शासन योग्य व्यक्ति के नियंत्रण में होने से राष्ट्र सुरक्षित रहता है। (5) मुसोलिनी के युग में इटली में आर्थिक और औद्योगिक विकास हुआ।'

संघ परिवार के सभी मुख और मुखौटे हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा को ही एकमात्र भारतीय अवधारणा मानते हैं और धर्म तो राष्ट्र का केन्द्रीय संघटक अवयव है। बाकी सभी धर्मावलम्बी भारत के लिए विदेशी हैं, पराये हैं और उन्होंने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को भ्रष्ट किया है। संघ के शीर्ष सिद्धान्तकार गोलवरकर ने तो अपनी किताब 'वी अवर नेशनहुड डिफाइण्ड' में कहा भी है कि ''मुसलमान इस देश में रह सकते हैं, लेकिन पूर्णतया हिन्दू राष्ट्र की अधीनता में, किसी भी चीज़ पर दावा न करते हुए, सुविधाओं से वंचित होकर। विशेष व्यवहार तो दूर, वे एक नागरिक के अधिकारों से भी वंचित होंगे।''

संघ परिवार के शीर्ष सिद्धान्तकारों के ये ''महान'' विचार अब सरकारी पाठ्यपुस्तक में चमक रहे हैं। 11वीं की समाजशास्त्र की पुस्तक में अन्य धर्मों पर हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता स्थापित की गई है और हिन्दू धर्म को भारतीय समाज, संस्कृति का पथ प्रदर्शक बताया गया है। मध्यकाल को भारत का अन्धकार पक्ष बताने वाली ये किताबें लिखती हैं कि ''मुगलों ने हिन्दुओं को दोयम दर्जे का नागरिक बनाकर प्रताड़ना का जो दौर शुरू किया वह अंग्रेजों के समय भी जारी रहा। ऐसे में डा. हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना की जिसने हिन्दुओ में पुनः जागृति और समाज में समरसता का संचार किया।''

हिन्दुओं में पुनः जागृति करने के नाम पर ही पिछले दिनों मध्य प्रदेश सरकार ने भी स्कूलों में वन्देमातरम् गाना और 'सूर्यनमस्कार' के कार्यक्रम को अनिवार्य बनाने की कवायद की थी। हालांकि व्यापक विरोध के कारण सरकार को घोषित करना पड़ा कि यह अनिवार्य नहीं स्वैच्छिक है।

चुनावी राजनीति की मजबूरियों के चलते भले ही संघ परिवार की राजनीतिक शाखा भाजपा दलितों को आरक्षण देने का समर्थन करती हों, लेकिन वस्तुतः आज भी तहेदिल से वह वर्ण व्यवस्था की हिमायती है। इसीलिए वह जाति व्यवस्था के उन्मूलन की बात न करके सामाजिक समरसता की बात करता है। वह अमानवीय वर्ण व्यवस्था का ही पैरोकार है।

लगभग सभी पुस्तकों में इतिहास के नाम पर पुराण-कथाओं, झूठ-फरेब और अंधविश्वासों का घालमेल है। यह बताता है कि ये भगवाधारी इतिहास से किस कदर भयाक्रान्त हैं। उन्हें पता है कि अगर भावी पीढ़ी वैज्ञानिक इतिहास दृष्टि से और फासिस्टों के काले इतिहास से परिचित हो जायेगी तो उनकी सत्ता का कोई अस्तित्व नहीं रहेगा। इसीलिए वे बौखलाये हुए हैं और जहां भी उनकी सरकारें हैं वहां तमाम शिक्षण संस्थानों, अकादमिक संस्थाओं में केसरिया ब्रिगेड के फासिस्ट टट्टुओं को भरा जा रहा है, पाठ्यपुस्तकों के साथ यह इतिहासविरोधी मनमाना तोड़फोड़ इनके इसी डर का नतीजा है।

दरअसल ये सारी कारगुजारियाँ युवा पीढ़ी के विवेक को कुण्ठित करने, उनकी तर्कशक्ति को कमज़ोर करने और उनके मानस को साम्प्रदायिक विद्वेष से भरने की कुत्सित साज़िशों के तहत किया जा रहा है। यह युवा वर्ग की परिवर्तनकामी ऊर्जा और सर्जनात्मकता को अन्ध आस्थावादी उन्मादी भीड़ में बदलने की तैयारी है। इसलिए हमें चौकन्ना रहना है। गुजरात के बाद हिन्दुत्व की नयी प्रयोगशालाएँ तैयार हो रही हैं।

संसदीय वामपंथी बातबहादुरों को प्रबन्धन कला सिखाने के लिए आमन्त्रण

● आशु, दिल्ली

अपनी सच्चाई या बेईमानी को दो तरीके से समझा जा सकता है। आगमनात्मक रूप से, यानी इण्डक्टिव लॉजिक से या फिर निगमनात्मक रूप से, यानी डिडक्टिव लॉजिक से। अभी हाल ही में भारतीय प्रबन्धन संस्थान के छात्रों और फैकल्टी ने "मार्क्सवादी" धुरंधर सीताराम येचुरी को प्रबन्धन पर लेक्चर देने के लिए बुलाया। अब इससे लाल मिर्च खाकर विरोध-विरोध की रट लगाने वाले इन तोतों को समझ लेना चाहिए कि वे मज़दूरों के हिमायती हैं या पूँजीपतियों के।

वैसे प्रबन्धन के विद्यार्थियों की यह मासूम जिज्ञासा बिल्कुल वाजिब ही थी कि आखिर ये संसदीय बातबहादुर बंगाल और केरल में उन्हीं नीतियों को कुशलता के साथ कैसे लागू करते हैं जिन्हें लागू करने के बाद केन्द्र में हर पाँच साल, तो कभी-कभी तीन

साल पर सरकारें बदल जाया करती हैं। और यहाँ देखिये! तीन दशक होने को आये, और बदस्तूर मज़दूर वर्ग और आम जनता के साथ ग़द्दारी किये जा रहे हैं और चुनाव जीते जा रहे हैं! अरे बाबू मोशाय! आपकी सफलता का राज़ क्या है? यही तो जानना चाहते थे प्रबन्धन के छात्र येचुरी साहब से! इतने लम्बे समय तक सफलतापूर्वक चार सौ बीसी कैसे कर पाते हैं आप "मार्क्सवादी" लोग?

अभी नन्दीग्राम और सिंगूर में जो कुछ हो रहा है वह सबको पता ही है। बुद्धदेव भट्टाचार्य की सरकार तो ज्योति बसु से भी चार कदम आगे बढ़कर देशी-विदेशी पूँजी को सम्मोहित करने के लिए केंचुल नृत्य किये जा रही है! और 'दि हिन्दू' को दिये गये अपने साक्षात्कार में बुद्धदेव भट्टाचार्य ने साफ़ स्वीकार कर लिया कि अब विदेशी निवेश के बिना कुछ नहीं किया जा सकता है और देशी पूँजी निवेश तो करना ही है। इसलिए मज़दूरों को अच्छी तरह से रहना चाहिए और अनुशासित रहना चाहिए। उन्हें पूँजीपतियों के साथ सहकार स्थापित करना चाहिए और अपनी ज़रूरतों और खुद पर संयम रखना चाहिए।

जब चुनाव आता है तो संसदीय वामपंथी पाखण्डी जमकर मज़दूर-मज़दूर चिल्लाते हैं और बहुत देर तक चिदम्बरम के दरवाज़े पर दरबान की तरह खड़े रहते हैं तब जाकर रोज़गार गारण्टी योजना का लॉलीपॉप लाकर जनता के हाथ में थमा देते हैं ताकि व्यवस्था का भ्रम कुछ समय और क़ायम रहे। चुनाव के वक्त तो रोज़गार गारण्टी और कामगार सामाजिक सुरक्षा कानून को लेकर सारे संसदीय वामपंथी बहुत हल्ला मचा रहे थे कि यह उनके दबाव के कारण हुआ जबकि सामाजिक सुरक्षा कानून का खाका तैयार करने वाले अर्जुन सेनगुप्ता ने खुद ही बोल दिया कि यह कानून कोई समाधान नहीं है बल्कि एक सेफ्टी वाल्व है!

लेकिन इन सारे विरोधाभासों के बावजूद लोगों में भ्रम बनाए रखने में और लोगों को बेवकूफ़ बनाकर प्रबन्धित करने में इन लाल मिर्चखोर तोतों ने अपनी दक्षता दिखला दी है। इसीलिए तो प्रबन्धन के छात्र येचुरी जी के अमृत वचन सुनने को व्यग्र हो रहे हैं! जाहिर है! समझा जा सकता है!

'इंकलाब ज़िंदाबाद' का अर्थ

हम 'यतींद्रनाथ ज़िन्दाबाद' का नारा लगाते हैं। इससे हमारा अभिप्राय यह होता है कि उनके जीवन के महान आदर्शों तथा उस अथक उत्साह को सदा-सदा के लिए बनाए रखें जिसने इस महानतम बलिदानी को उस आदर्श के लिए अकथनीय कष्ट झेलने एवं असीम बलिदान करने की प्रेरणा दी। यह नारा लगाने से हमारी यह लालसा प्रकट होती है कि हम भी अपने आदर्शों के लिए ऐसे ही अचूक उत्साह को अपनाएँ और यही वह भावना है जिसकी हम प्रशंसा करते हैं। इसी प्रकार हमें 'इंकलाब' शब्द का अर्थ भी कोरे शाब्दिक रूप में नहीं लगाना चाहिए। ... क्रान्ति शब्द का अर्थ प्रगति के लिए परिवर्तन की एक भावना एवं आकांक्षा है। लोग साधारणतया जीवन की परम्परागत दशाओं के साथ चिपक जाते हैं और परिवर्तन के विचार मात्र से ही काँपने लगते हैं। यही वह अकर्मण्यता की भावना है जिसके स्थान पर क्रान्तिकारी भावना जागृत करने की आवश्यकता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि अकर्मण्यता का वातावरण निर्मित हो जाता है और रूढ़िवादी शक्तियाँ मानव समाज को कुमार्ग पर ले जाती हैं। ये परिस्थितियाँ मानव समाज की उन्नति में गतिरोध का कारण बन जाती हैं। क्रान्ति की इस भावना से मनुष्य जाति की आत्मा स्थायी तौर ओत-प्रोत रहनी चाहिए, जिससे कि रूढ़िवादी शक्तियाँ मानव समाज की प्रगति की दौड़ में बाधा डालने को संगठित न हो सकें। यह आवश्यक है कि पुरानी व्यवस्था सदैव बदलती रहे और वह नयी व्यवस्था के लिए स्थान रिक्त करती रहे, जिससे कि यह आदर्श व्यवस्था संसार को बिगड़ने से रोक सके। यह है हमारा वह अभिप्राय जिसको हृदय में रखकर हम 'इंकलाब ज़िन्दाबाद' का नारा बुलंद करते हैं।

('मॉडर्न रिव्यू' के सम्पादक रामानंद चट्टोपाध्याय को लिखे गए भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त के पत्र से।)